पण्डित चिरंजीलाल शर्मा राजकीय महाविद्यालय,करनाल

संस्कृत-पाठ्यक्रम के परिणाम

संस्कृत-विभाग 2025-26

(Learning Outcomes of the Sanskrit Course)

बी.ए. प्रथम-वर्ष

प्रथम सेमेस्टर (संस्कृत-मेजर) B23-SKT-101, नीतिसाहित्यं व्याकरणं च

- हितोपदेश नीति-शास्त्र परक पुस्तकों में हितोपदेश प्रमुख स्थान रखता है,इसके अध्ययन से विद्यार्थियों में भारतीय जनमानस और परिवेश की जानकारी प्राप्त होती है,संस्कृत भाषा को पढ़ने में रुचि जागृत होती है व बुद्धि का विकास होता है,बोलचाल में प्रवीणता आती है,विचारों में स्पष्टता,पूर्णता व प्रभावोत्पादकता आती है,सद्गुणों का परिचय मिलता है,और एक सज्जन मनुष्य बनने में हमारी सहायता होती है।

- नीतिशतक में नीति अर्थात न्यायपूर्ण व्यवस्था के अनुसार कथन किया जाता है उससे संबंधित श्लोकों को पाठ्यक्रम में निर्धारित किया गया है। इन श्लोकों के माध्यम से विद्यार्थी ऐसी जानकारी प्राप्त करते हैं जो उन्हें बेहतर व्यक्तित्व का स्वामी बनने में मदद करती हैं ।

- शब्दरूप एवं धातुरूप संस्कृत भाषा के शुद्ध लेखन व पठन-पाठन के साथ-साथ भाषा के सम्यक ज्ञान के लिए शब्द-रूप एवं धातु-रूप का ज्ञान अत्यावश्यक है,इनके माध्यम से छात्र शब्दों के उचित स्वरूप को जानकर भाषा में प्रयोग करने में सक्षम हो पाते हैं।

-- **संधि** भाषा में व्याकरण के अनेक पक्षों में से सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है,नियमानुसार संधि करने से भाषा के शुद्ध स्वरूप के ज्ञान में वृद्धि होती है।

-संस्कृत श्लोकों को कंठस्थ करना स्मरण शक्ति को विस्तार देने के लिए एक अच्छी विधा है,इससे भाषा पर पकड़ बनती है साथ ही छात्रों का उच्चारण भी शुद्ध होता है।

बी.ए. प्रथम-वर्ष

प्रथम सेमेस्टर (SANSKRIT MINOR) B23-SKT-104 प्रयोगात्मक-संस्कृतम्

संवाद कौशल में प्रवीणता - विद्यार्थी संस्कृत में दैनिक जीवन के अभिवादन, परिचय, परिवार व विद्यालय-सम्बन्धी वार्तालाप करने में सक्षम होंगे।

अनुवाद दक्षता - विद्यार्थी सरल वाक्यों से लेकर संज्ञा, विशेषण एवं क्रियापद युक्त वाक्यों का हिन्दी से

संस्कृत में अनुवाद कर सकेंगे तथा संयुक्त वाक्यों का भी अभ्यास करेंगे।
स्मरण एवं कण्ठस्थीकरण - विद्यार्थी 'फलशाकादि सामानि' जैसे श्लोकों का अध्ययन कर उनके भावार्थ को समझ पाएँगे और भगवद्गीता के श्लोकों का कण्ठस्थीकरण व व्याख्या कर सकेंगे।
पुनरावृत्ति व आत्मसमीक्षा - प्रत्येक इकाई (Unit) की पुनरावृत्ति के माध्यम से विद्यार्थी अपने अध्ययन को सुदृढ़ करेंगे और प्रश्नोत्तर अभ्यास से आत्मसमीक्षा करेंगे।

व्याकरण का ज्ञान - विद्यार्थी कारक-प्रकरण (कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण, सम्बन्ध) का अध्ययन कर उनके प्रयोग को वाक्यों में पहचानने और प्रयोग करने में समर्थ होंगे।
अभिव्यक्ति व लेखन कौशल - मौखिक संवाद के साथ-साथ विद्यार्थी संस्कृत में वाक्य-निर्माण, प्रश्नोत्तर और लिखित अभ्यास द्वारा अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करेंगे।
संस्कृत भाषा के प्रति रुचि व संस्कार - श्लोक अध्ययन, गीता-पाठ और संवाद के माध्यम से विद्यार्थी संस्कृत भाषा के प्रति आत्मीयता, संस्कार और सांस्कृतिक बोध का विकास करेंगे।

बी.ए.द्वितीय-वर्ष

तृतीय सेमेस्टर (संस्कृत-मेजर) B-23 SKT 301 ऐतिहासिक महाकाव्य एवं व्याकरणम्

महाकाव्य अध्ययन की समझ - विद्यार्थी महाभारत एवं रामायण के चयनित प्रसंगों (यक्ष-युधिष्ठिर संवाद, अयोध्या काण्ड - कच्चित् सर्गः) की कथावस्तु एवं श्लोकों का अध्ययन कर उनके सांस्कृतिक, नैतिक तथा दार्शनिक पक्षों को समझ सकेंगे।

श्लोक-पठन एवं अनुवाद कौशल - विद्यार्थी संस्कृत श्लोकों का शुद्ध पठन, हिन्दी अनुवाद तथा गहन व्याख्या करने में सक्षम होंगे।

विश्लेषणात्मक क्षमता - चयनित प्रसंगों की व्याख्या एवं चर्चा के माध्यम से विद्यार्थी नैतिक प्रश्नों, आदर्शों एवं जीवन-दृष्टि पर विचार कर सकेंगे।

व्याकरण का ज्ञान - विद्यार्थी संस्कृत व्याकरण के महत्वपूर्ण अंगो जैसे -

- **समास** (अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि, द्वंद्व),
- **कृत् प्रत्यय** (क्त्वा, तुमुन्, ण्यत्, यत्, क्त, क्तवतु, शतृ, शानच्, तव्यत्, अनीयर्) की परिभाषा, भेद, अर्थ एवं प्रयोग उदाहरण सहित सीख सकेंगे।

भाषा में दक्षता - विद्यार्थी संस्कृत संख्यावाची शब्दों (1-100) का शुद्ध उच्चारण तथा प्रत्याहार सूत्रों का सही प्रयोग समझेंगे और उच्चारण कौशल में दक्ष होंगे।

प्रत्याहार सूत्र ज्ञान - वरदराजकृत *लघुसिद्धांतकौमुदी* के अनुसार प्रत्याहार सूत्रों का विस्तृत अध्ययन कर विद्यार्थी ध्वन्यात्मक एवं व्याकरणिक संरचना का गहन ज्ञान प्राप्त करेंगे।
अभ्यास व पुनरावृत्ति कौशल - निरंतर पुनरावृत्ति, लिखित एवं मौखिक अभ्यास के द्वारा विद्यार्थी अपने ज्ञान को स्थिर करेंगे और परीक्षा/व्यावहारिक उपयोग हेतु दक्षता अर्जित करेंगे।
संस्कृत भाषा के प्रति अभिरुचि एवं संस्कार - महाकाव्य अध्ययन, श्लोक पठन और व्याकरण के अभ्यास से विद्यार्थी संस्कृत भाषा के साहित्यिक सौंदर्य, सांस्कृतिक मूल्य और परंपरा के प्रति गहरी रुचि विकसित करेंगे।

बी.ए. तृतीय-वर्ष,

पञ्चम सेमेस्टर (संस्कृत-मेजर) B-23 SKT 501 वैदिकसाहित्यपरिचयः नाटकम् एवं व्याकरणम्

नाट्य-साहित्य की समझ - विद्यार्थी कालिदासकृत *अभिज्ञानशाकुन्तलम्* के प्रथम से चतुर्थ अंकों का अध्ययन कर इसकी कथावस्तु, पात्र-चित्रण एवं नाट्य-शैली को समझ सकेंगे।

आलोचनात्मक दृष्टि का विकास - नाटक के अंकों का सारांश, प्रश्नोत्तर और आलोचनात्मक अभ्यास द्वारा विद्यार्थी साहित्यिक विवेचना व आलोचनात्मक चिंतन की क्षमता विकसित करेंगे।

कालिदास अध्ययन - विद्यार्थी कालिदास के जीवन, काल-निर्धारण, काव्य-शैली और नाट्य-शैली का गहन अध्ययन कर संस्कृत साहित्य में उनके योगदान का मूल्यांकन कर सकेंगे।

संस्कृत साहित्य इतिहास का ज्ञान - विद्यार्थी वैदिक साहित्य (संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्) तथा वेदाङ्ग साहित्य की प्रमुख विशेषताओं और ऐतिहासिक विकास की समझ प्राप्त करेंगे।

व्याकरणिक दक्षता - *लघुसिद्धान्तकौमुदी* के विभक्त्यर्थ-प्रकरण का अध्ययन कर विद्यार्थी सूत्रार्थ, वाक्य-रचना और अशुद्धि-संशोधन में निपुण होंगे।

अलंकार-ज्ञान - विद्यार्थी अनुप्रास, श्लेष, यमक, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अतिशयोक्ति, विशेषोक्ति, विभावना, अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों के लक्षण, उदाहरण एवं उनके संगति-विश्लेषण का ज्ञान प्राप्त

करेंगे।

व्याख्या एवं पठन-कौशल - विद्यार्थी संस्कृत ग्रंथों के शुद्ध पठन, व्याख्या और साहित्यिक विवेचन में दक्षता प्राप्त करेंगे।

अभ्यास एवं पुनरावृत्ति कौशल - निरंतर अभ्यास और पुनरावृत्ति द्वारा विद्यार्थी लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति में सक्षम होंगे तथा परीक्षोपयोगी दृष्टि से तैयार होंगे।

साहित्यिक संस्कार एवं अभिरुचि - नाट्य, काव्य, व्याकरण और अलंकार-शास्त्र के अध्ययन से विद्यार्थी संस्कृत साहित्य के सौंदर्य, भावप्रवणता और शास्त्रीयता के प्रति रुचि एवं संस्कार विकसित करेंगे।
अतः समग्र रूप से कहें तो इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी कालिदासकृत *अभिज्ञानशाकुन्तलम्* के चयनित अंकों का गहन अध्ययन कर नाट्य-कला, पात्र-चित्रण एवं काव्य-शैली को समझ सकेंगे। कालिदास के जीवन, साहित्यिक योगदान और उनकी नाट्य-शैली का विवेचन करके आलोचनात्मक दृष्टि विकसित होगी। संस्कृत साहित्य के इतिहास (वैदिक, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदाङ्ग) का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त होगा। *लघुसिद्धान्तकौमुदी* के विभक्त्यर्थ-प्रकरण का अभ्यास कर विद्यार्थी व्याकरणिक शुद्धता और वाक्य-निर्माण में दक्ष होंगे। अलंकार-शास्त्र के विविध अलंकारों (अनुप्रास, श्लेष, उपमा, रूपक आदि) का ज्ञान लेकर वे साहित्यिक अभिरुचि और रसास्वादन की क्षमता अर्जित करेंगे। निरंतर अभ्यास व पुनरावृत्ति से पठन, व्याख्या, अनुवाद और लेखन-कौशल परिपुष्ट होगा तथा संस्कृत भाषा-साहित्य के प्रति गहरी रुचि और संस्कार विकसित होंगे।

बी.ए. तृतीय-वर्ष,

पञ्चम सेमेस्टर (VOC-संस्कृत) B-25 VOC -142 आयुर्वैदिक पाककला और सात्विक जीवनशैली

1. आहार वर्गीकरण की समझ – विद्यार्थी सात्त्विक, राजसिक और तामसिक भोजन की विशेषताओं एवं उनके मानसिक-शारीरिक प्रभावों को समझ पाएंगे।

2. ऋतु-अनुसार आहार ज्ञान – विद्यार्थी आयुर्वेद के अनुसार ऋतु-भोजन (ऋतुचर्या) के सिद्धांतों को जानेंगे और जीवन में उनका प्रयोग कर सकेंगे।

3. आयुर्वेदिक ग्रन्थों का अध्ययन – विद्यार्थी अन्न, जल एवं भोजन के महत्व को आयुर्वेदिक शास्त्रों के दृष्टिकोण से समझेंगे और उनका भावार्थ ग्रहण करेंगे।

4. भारतीय आहार सामग्री का ज्ञान – विद्यार्थी प्रमुख अनाज (यव, तिल, मधु, शर्करा, सत्तु आदि), मसाले (हल्दी, हींग, जीरा, दालचीनी आदि), दुग्ध-उत्पाद और फलों की उत्पत्ति, गुण एवं पोषक महत्व को जानेंगे।

5. भोजन-सिद्धांत की समझ – विद्यार्थी आयुर्वेद में उल्लिखित भोजन के सिद्धांतों को आत्मसात कर संतुलित आहार की अवधारणा को समझ पाएंगे।

6. उपवास एवं फलाहार ज्ञान – विद्यार्थी उपवास में प्रयुक्त फलाहार एवं व्यंजनों के आयुर्वेदिक महत्व और स्वास्थ्य लाभ को समझेंगे।

7. पेय पदार्थ व औषधीय उपयोग – विद्यार्थी औषधीय पेय (बाल, गुलाब अवलेह आदि) के गुण और उनके लाभ का अध्ययन कर सकेंगे।

8. पदार्थों के गुण-लाभ की पहचान – विद्यार्थी आहार-सामग्री (फल, अनाज, मसाले, पेय) के गुण, दोष-निवारण तथा स्वास्थ्य-लाभ का विवेचन कर सकेंगे।

9. प्रायोगिक कौशल –

    - ऋतु-अनुसार आहार तैयार करना
    - यवागु (दलिया) बनाना
    - आरोग्यदायक व्यंजन (पिण्डयामक दधि, कफ-समक सूप आदि) बनाना
    - दोष (वात, पित्त, कफ) के अनुसार पञ्चपञ्च आहार तालिका एवं आहार चार्ट तैयार करना

10. इन प्रायोगिक अभ्यासों द्वारा विद्यार्थी स्वस्थ एवं संतुलित आहार बनाने में दक्ष होंगे।

11. समग्र दृष्टिकोण का विकास – विद्यार्थी आहार को केवल पोषण नहीं बल्कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन के साधन के रूप में समझेंगे तथा आधुनिक संदर्भ में आयुर्वेदिक आहार की उपयोगिता पर विचार कर सकेंगे।

अतः स्पष्ट है कि इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी सात्त्विक, राजसिक और तामसिक भोजन की विशेषताओं, ऋतु-अनुसार आहार के नियमों तथा आयुर्वेदिक ग्रन्थों में वर्णित अन्न, जल और भोजन के महत्व को समझ सकेंगे। वे भारतीय आहार सामग्री, मसाले, दुग्ध-उत्पाद और फलों के गुणों एवं स्वास्थ्य-लाभ का ज्ञान प्राप्त करेंगे। उपवास हेतु फलाहार, औषधीय पेय तथा विभिन्न पदार्थों के गुण-दोष का अध्ययन कर विद्यार्थी आहार को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक संतुलन का साधन मानने की दृष्टि विकसित करेंगे। प्रायोगिक अभ्यासों (ऋतु-अनुसार आहार, यवागु, आरोग्यदायक व्यंजन, आहार-चार्ट निर्माण) से उनमें स्वस्थ जीवन-पद्धति अपनाने की व्यावहारिक दक्षता का विकास होगा।

B.C.A./BTTM/BJMC/Home Science/IT Hons/ B.Sc. Phy. Sc./B.Sc. Life. Sc. द्वितीय वर्ष

तृतीय सेमेस्टर (AEC- संस्कृत) B-23 AEC-133 संस्कृत भाषा एवं सम्प्रेषण**-3**

---

1. सन्धि**-**ज्ञान

    - विद्यार्थी दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण् एवं अयादि सन्धि की परिभाषा, नियम और उदाहरणों को समझ सकेंगे।
    - वे सन्धि-विच्छेद की प्रक्रिया को आत्मसात कर संस्कृत पठन-पाठन में शुद्धता ला पाएँगे।

2. संख्यावाची शब्दों का प्रयोग

    - विद्यार्थी 1 से 100 तक के संख्यावाची शब्दों का शुद्ध लेखन, उच्चारण और व्यवहार में प्रयोग कर सकेंगे।

    - वे संख्याओं को कंठस्थ कर सही संदर्भों में उनका उपयोग कर पाएँगे।

3. ध्येय-वाक्यों का अध्ययन

    - विद्यार्थी राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय प्रमुख संस्थानों के संस्कृत ध्येय-वाक्यों को जानेंगे।

    - वे ध्येय-वाक्यों का शुद्ध लेखन, अर्थ-समझ एवं सन्दर्भ सहित महत्त्व स्पष्ट कर पाएँगे।

    - ध्येय-वाक्यों के माध्यम से संस्कृत की दार्शनिक एवं प्रेरणादायी परम्परा से जुड़ाव स्थापित करेंगे।

4. शब्द-ज्ञान (फल एवं शाक-सूची)

    - विद्यार्थी संस्कृत में फलों और सब्जियों के नाम शुद्ध उच्चारण एवं लेखन सहित कंठस्थ कर सकेंगे।

    - दैनिक जीवन में संस्कृत प्रयोग की प्रवृत्ति का विकास होगा।

5. पुनरावृत्ति एवं समग्र अभ्यास

    - विद्यार्थी सभी सीखे हुए विषयों (सन्धि, संख्यावाची शब्द, ध्येय-वाक्य, फल-शाक नाम, श्लोक) का समन्वित अभ्यास करेंगे।

    - पुनरावृत्ति और मूल्यांकन के द्वारा उनमें आत्मविश्वास तथा भाषिक दक्षता का विकास होगा।

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा में सन्धि-विच्छेद, संख्यावाची शब्दों का प्रयोग, ध्येय-वाक्यों की समझ, साहित्यिक अध्ययन तथा फल-शाक नामों की शब्दावली सिखाता है। साथ ही पुनरावृत्ति एवं अभ्यास द्वारा उनमें भाषिक दक्षता, शुद्ध उच्चारण तथा व्यावहारिक संस्कृत प्रयोग की क्षमता विकसित करता है।

B.Sc. Phy. Sc. द्वितीय वर्ष

तृतीय सेमेस्टर (MDC - संस्कृत) संस्कृत **B23-SKT-303** यज्ञप्रक्रियायाः वैज्ञानिकाधारः एवं वर्णोच्चारणम्

यह पाठ्यक्रम यज्ञ की अवधारणा, महत्व एवं व्यवहारिक पक्ष पर केंद्रित है। इसमें प्रारम्भ में यज्ञ की व्युत्पत्ति, अर्थ, परिभाषा और लाभ बताए जाते हैं, तत्पश्चात् इसके भेद, यज्ञशाला की रचना और यज्ञोपकरण का अध्ययन

कराया जाता है। विद्यार्थी यज्ञ सामग्रियों के वैज्ञानिक गुण, पर्यावरणीय प्रभाव, वैदिक मन्त्रों के मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक पक्ष को समझते हैं।

इसके साथ ही मन्त्रों द्वारा पर्यावरण-शुद्धि, वायु-गुणन, बुद्धि-वृद्धि, स्वास्थ्य-लाभ जैसे विषयों का विवेचन होता है। पाठ्यक्रम में वर्णोच्चारण-शिक्षा, उच्चारण-स्थान एवं शुद्ध उच्चारण का अभ्यास भी सम्मिलित है।

अन्ततः पुनरावृत्ति, प्रश्नोत्तर और मूल्यांकन के माध्यम से विद्यार्थी यज्ञ के धार्मिक, वैज्ञानिक, पर्यावरणीय एवं सामाजिक महत्व को भली-भाँति समझते हैं तथा शुद्ध संस्कृत उच्चारण में दक्ष होते हैं।

इस पाठ्यक्रम शिक्षण-अधिगम परिणाम इस प्रकार से रहेंगे -

1. सैद्धान्तिक समझ
    - विद्यार्थी यज्ञ की व्युत्पत्ति, परिभाषा, भेद तथा महत्व को समझ सकेंगे।
    - वे यज्ञशाला की रचना एवं यज्ञोपकरणों की पहचान तथा उपयोग बता सकेंगे।
2. वैज्ञानिक एवं पर्यावरणीय दृष्टि
    - विद्यार्थी यज्ञ-सामग्रियों के वैज्ञानिक गुणों को स्पष्ट कर पाएंगे।
    - यज्ञ के पर्यावरणीय लाभ (वायु-शुद्धि, पर्यावरण संरक्षण) की व्याख्या कर सकेंगे।
3. मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक पक्ष
    - वे वैदिक मन्त्रों के मनोवैज्ञानिक प्रभाव तथा ईश्वरस्तुति एवं सामाजिक पक्ष को समझेंगे।
    - विद्यार्थी यज्ञ के स्वास्थ्य, नैरोग्य और बुद्धिवृद्धि से सम्बन्ध को जानेंगे।
4. भाषिक दक्षता
    - विद्यार्थी संस्कृत वर्णोच्चारण का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करेंगे।
    - वर्णों के उच्चारण-स्थान एवं शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कर सकेंगे।
5. व्यावहारिक कौशल
    - विद्यार्थी यज्ञोपकरणों के व्यवहारिक प्रयोग का अभ्यास करेंगे।
    - पुनरावृत्ति एवं अभ्यास के बाद वे यज्ञ की संपूर्ण प्रक्रिया तथा उससे सम्बन्धित वैज्ञानिक-आध्यात्मिक लाभों का विवेचन कर सकेंगे।

इस पाठ्यक्रम के शिक्षण-अधिगम परिणामों का सार यह है कि विद्यार्थी यज्ञ की परिभाषा, भेद और महत्व को समझेंगे, यज्ञशाला एवं यज्ञोपकरणों का प्रयोग जानेंगे तथा यज्ञ-सामग्रियों के वैज्ञानिक, पर्यावरणीय, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक लाभ को स्पष्ट कर पाएंगे। साथ ही, वे संस्कृत वर्णोच्चारण की शुद्धता में दक्ष होकर यज्ञ की संपूर्ण प्रक्रिया और उसके वैज्ञानिक-आध्यात्मिक पक्षों का विवेचन करने में सक्षम होंगे

B.Sc. IT Hons/ B.A English Hons. द्वितीय वर्ष

तृतीय सेमेस्टर (VAC-संस्कृत) B23-VAC-313 संस्कृत साहित्य में नाट्य एवं रंगमंच

यह पाठ्यक्रम भरतमुनि एवं नाट्यशास्त्र पर केन्द्रित है। इसमें विद्यार्थियों को क्रमशः नाट्यशास्त्र का परिचय, महत्व, नाट्य की उत्पत्ति, विकास और स्वरूप से अवगत कराया जाता है। इसके साथ ही रंगगृह, मण्डपनिवेश, स्तम्भस्थापना, रंगशीर्ष, दारुकर्म, भित्तिकर्म और चित्रकर्म जैसे नाट्य संबंधी स्थापत्य पक्षों का अध्ययन कराया जाता है।

इसके बाद विद्यार्थी अभिनय के प्रकार (हस्ताभिनय, शरीराभिनय, वाचिकाभिनय) का ज्ञान प्राप्त करेंगे। अंत में, पाठ्यक्रम में रस-सिद्धान्त का विस्तार से अध्ययन कराया जाएगा जिसमें शृंगार, वीर, शान्त, हास्य, करुण और रौद्र रस की व्याख्या एवं अभ्यास सम्मिलित हैं।

उपर्युक्त पाठ्यक्रम के आधार पर शिक्षण-अधिगम परिणाम इस प्रकार होंगे -

सैद्धान्तिक समझ

- विद्यार्थी भरतमुनि एवं नाट्यशास्त्र का परिचय, महत्व तथा नाट्य की उत्पत्ति, विकास और स्वरूप को समझ सकेंगे।

- वे नाट्यशास्त्र की मूलभूत संकल्पनाओं को पहचानकर उनकी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि स्पष्ट कर पाएंगे।

स्थापत्य एवं तकनीकी ज्ञान

- विद्यार्थी रंगगृह, मण्डपनिवेश, स्तम्भस्थापना, रंगशीर्ष, दारुकर्म, भित्तिकर्म एवं चित्रकर्म के स्थापत्य व कलात्मक पक्षों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

- वे रंगमंचीय संरचनाओं के महत्व को व्यवहारिक और कलात्मक दृष्टि से समझेंगे।

अभिनय कौशल

- विद्यार्थी अभिनय की संकल्पना एवं उसके प्रकार (हस्ताभिनय, शरीराभिनय, वाचिकाभिनय) का अभ्यास कर सकेंगे।

- वे नाट्य मंचन में विभिन्न प्रकार के अभिनय के प्रयोग की योग्यता अर्जित करेंगे।

रस-सिद्धान्त की समझ

- विद्यार्थी रस की संकल्पना एवं स्वरूप को समझ सकेंगे।

- वे विभिन्न रसों - शृंगार, वीर, शान्त, हास्य, करुण एवं रौद्र - की विशेषताओं की व्याख्या कर सकेंगे।

- नाट्य एवं साहित्यिक रचनाओं में रस के प्रयोग का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।

आलोचनात्मक एवं व्यावहारिक दक्षता

- विद्यार्थी नाट्यशास्त्र से सम्बन्धित निबन्धात्मक एवं टिप्पणी-आधारित प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम होंगे।

- वे नाट्यशास्त्र की अवधारणाओं को आधुनिक नाट्य एवं कला परिप्रेक्ष्य में लागू करने की योग्यता विकसित करेंगे।

संक्षेप में यदि कहें तो यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में नाट्यशास्त्र की गहरी सैद्धान्तिक समझ, अभिनय व रस-बोध की दक्षता तथा नाट्य स्थापत्य और आलोचनात्मक विवेक का विकास करता है।